REET 2025

LEVEL-2

वंदन बैच

राज इतिहास एवं कला संस्कृति

मेवाड़ राजवंश

Part -2

LIVE 08-02-2025 09:00 AM

महाराणा कुम्भा 1433-1468

- कुम्भा को राजस्थान स्थापत्य कला का जनक कहा जाता है।
- पिता- मोकल
- माता- सौभाग्य देवी
- पुत्री- रमाबाई जिसे जावर शिलालेख में वागेश्वरी की उपाधि दी।
- चित्रकला गुरू- हीरानन्द →१४२३ → सुपार्श्वनाथ-चरित्र → महाराणा मोकल
- संगीत गुरू - सारगधर व्यास

निम्न शासकों की उपाधि

हिन्दुआ सूरज - राणा सांगा

हिन्दू सुरताण - महाराणा कुम्भा

हिन्दूस्त - जसवन्त सिंह प्रथम

हिन्दू बादशाह - राव मालदेव

कुम्भा को प्राप्त उपाधियाँ

- महाराणा कुम्भा को 108 उपाधियाँ प्रदान की।
- राजगुरू - (राजाओं को शिक्षा देने की क्षमता होने के कारण)
- टोडरमल, नाटकराज, अश्वपति, गजपति, दानगुरू
- धीमान - (बुद्धिमतापूर्वक निर्माण कार्य करवाना)
- हालगुरू - (गिरी दुर्गों का स्वामी) कविराजा श्यामलदास
- राणों रासो- (विद्वानों का आश्रयदाता)
- चापगुरू- (धनुर्विधा में निपूण)
- छापगुरू- छापामार पद्धति में कुशल

- शैलगुरू - (शस्त्र या भाला का उपयोग सिखाने वाला)
- अभिनव भरताचार्य (नव्य भरत) संगीत क्षेत्र में विपूल ज्ञान
- हिन्दू सुरताण- समकालीन मुस्लिम शासकों द्वारा "हिन्दूपति बादशाह"
- नंदनंदिश्वर - (नंदिकेश्वर का अनुसरण करने वाला)
- निःशख / निर्भय नरेश
- वीणा वादेन प्रविणेन

- कुम्भा के नेतृत्व में नाहर सिंह ढोढिया ने सिरोही शासक साहसमल को पराजित कर अधिकार किया।
- नागौर विजय शम्स खाँ और नसिरूद्दीन को कुम्भा ने पराजित किया।
- कुम्भा के समय शम्स खाँ प्रथम मुस्लिम स्वतंत्र शासक था।
- गुजरात अभियान - कुम्भा ने कुतुबुद्दीन को पराजित किया तथा शम्स खाँ मारा गया।
- कुम्भा ने सबसे पहले अपने पिता के हत्यारे चाचा व मेरा की हत्या की
- कुम्भा ने रणमल की पासवान भारमली की सहायता से जहर देकर चितौड़गढ़ दुर्ग में रणमल की हत्या करवाई।

- सांरगपुर युद्ध 1437- कुम्भा ने खिलजी पर आक्रमण कर दिया तथा खिलजी को इस युद्ध में पराजित किया।
- इसका प्रमुख कारण महाराणा कुम्भा द्वारा सुल्तान महमूद खिलजी से महपा पंवार की मांग करना था।
- लेकिन महमूद खिलजी ने अपने शरणागतों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं था।
- इस कारण कुम्भा ने महमूद खिलजी - प्रथम पर आक्रमण किया।
- महमूद खिलजी - प्रथम ने महाराणा कुम्भा पर कुल 5 बार आक्रमण किया।

- कुम्भा ने इस विजय के उपलक्ष में अपने अराध्य देव विष्णु को समर्पित चितौड़गढ़ दुर्ग में विशाल विजय स्तम्भ (कीर्ति स्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- विजय स्तंभ- विजय स्तम्भ का निर्माण कुम्भा ने सांरगपुर विजय की याद में 1440 से 1448 में करवाया।
- नोट- इतिहासकार निलिमा मित्तल के अनुसार विजय स्तम्भ का निर्माण 1440 से 1460 ई के मध्य हुआ।
- विजय स्तम्भ के उपनाम विष्णु स्तम्भ (उपेन्द्रनाथ डे)
- कीर्ति स्तम्भ

- विक्ट्री टावर (VOCTORY TOWER)
- भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष
- पौराणिक देवताओं का अमूल्य कोष (जी एच औझा)
- नौ खण्डा महल
- रोम के टार्जन से तुलना (फर्ग्यूसन)
- संगीत की भव्य चित्रशाला (डॉ. सीमा राठौड़)
- कुतुबमीनार से श्रेष्ठ इमारत (कर्नल टॉड)
- ऊँचाई - 122 फीट (36.5 मीटर)
- चौड़ाई - 24 फीट

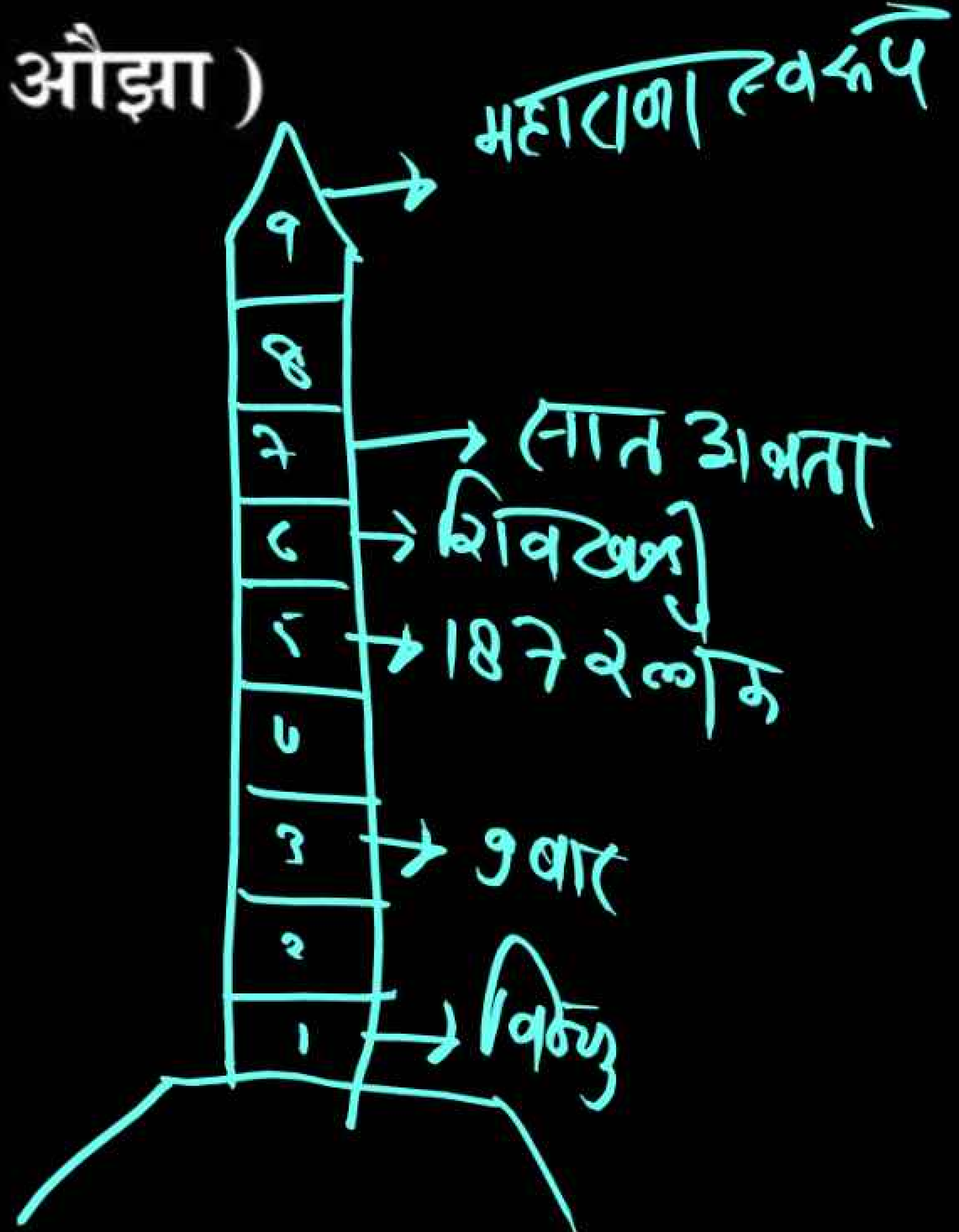

- सीढियां - 157
- पत्थर - पीला (लाइमस्टोन)
- आकृति - वृताकर व गर्जराकार
- निर्माण पद्धति - चापवक्र
- मंजिल- 9
- पहली मंजिल में विष्णु जी की मूर्ति है
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में 'अल्लाह' लिखा हुआ है
- 5वीं मन्जिल में 187 श्लोक लिखे हैं
- 7वीं मन्जिल में विष्णु के 7 अवतार है

- इसकी आठवी मंजिल पर कोई प्रतिमा नहीं है
- शिल्पी - जेता, नापा, पामा, पूंजा
- हल्दीघाटी युद्ध में राणाप्रताप की भील सेना का नेतृत्व करने वाला राणा पूंजा था।
- राजस्थान पुलिस, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, J. K. सीमेन्ट का प्रतीक चिन्ह विजय स्तम्भ है।
- महाराणा स्वरूप सिंह ने (1842 - 1861) इसकी सबसे ऊपरी मंजिल पर बिजली गिरने से टूटने पर पुनः मरम्मत करवाई।

- विजय स्तम्भ पर 15 अगस्त 1949 को एक रूपये का डाक टिकट जारी किया।
- जैन कीर्ति स्तम्भ- इसका निर्माण 13वीं शताब्दी में श्रेष्ठि (बघेरवाल जाति) के जैन जीजांक ने करवाया
- कीर्ति स्तम्भ प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ / ऋषभेदव जी को समर्पित है
- इसे आदिनाथ स्मारक भी कहा जाता है
- ऊँचाई - 75 / 76 फुट
- मंजिल - 7
- जैन कीर्तिस्तम्भ को मेरू कनकप्रभ: भी कहते हैं।

- कविराज श्यामलदास ने अपने ग्रन्थ "वीर विनोद' में लिखा है कि राजस्थान में कुल 250 दुर्ग है। जिनमें से 84 गिरी दुर्ग है उन 84 गिरी दुर्गों में से 32 गिरी दुर्गों का निर्माण महाराणा कुम्भा ने करवाया
- इस कारण इन्हें हालगुरू कहा जाता है
- कुम्भा ने बसन्तगढ़ दुर्ग, मचान, अचलगढ़ का निर्माण करवाया

कुम्भलगढ़ दुर्ग

कुम्भलगढ़ दुर्ग (1443-1459 राजसमन्द)

- कुम्भलगढ़ दुर्ग महाराणा कुम्भा ने अपनी पत्नी कुम्भलदेवी की याद में 1459 में बनवाया।
- कुम्भलगढ़ दुर्ग जरगा की पहाड़ी, हेमकूट की पहाड़ी, गंध मादन की पहाड़ी पर स्थित है।
- अबुल फजल ने कहा "यह दुर्ग इतनी बुलंदी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर की पगड़ी गिर जाती है ।
- कर्नल टॉड ने इस दुर्ग की तुलना इंग्लैण्ड के एस्ट्रूकन से की है।

कुम्भलगढ़ दुर्ग के उपनाम-

मच्छेन्द्रपुर

आत्मनिर्भर

कुम्भलमेरू

कमलपीर

वैरों का दुर्ग

आत्मनिर्भर दुर्ग

सुद्र्यो दुर्ग

मेवाड के राजाओं की शरणस्थली

मारवाड़ की छाती पर लटकी हुई तलवार

- इस दुर्ग में कुल नौ दरवाजे है।
- इस दुर्ग में प्रमुख नौ दरवाजे है।
- रामपोल, हनुमानपोल, विजयपोल, औरठपौल, हल्लापोल, भैरव पौल, निम्बु पौल, चौगानपौल, पांगड़ा पौल
- प्राचीर- इस दुर्ग की दिवार 36 किमी. लम्बी है। जिसे भारत की महान दिवार कहते है।
- इसकी दिवार पर एक साथ चार घोड़े दौड़ाए जा सकते है।

- इसका शिल्पी मंडन था।
- नोट- कुम्भलगढ़ दुर्ग, हाथी की नाल, दर्रा व कुम्भलगढ़ अभयारण राजसंमद में है।
- मेवाड़ की आँख कटारगढ
- जो कुम्भलगढ दुर्ग के ऊपर बना हुआ है।
- इसी कटार गढ़ के बादल महल की जूनाकचहरी में महाराणा प्रताप तथा राणा सांगा का जन्म हुआ।
- इसी कटार गढ़ में 1468 को उन्माद रोग से विकसित कुम्भा की हत्या इनके पुत्र उदा ने की थी।

- नोट- मेवाड़ का पित्रहन्ता राजा उदयसिंह प्रथम (उदा) इसी दुर्ग में मेवाड़ के गांधी माणिक्य लाल वर्मा को नजरबंद रखा
- नजरबन्द रखा गया तथा पृथ्वीराज सिसौदिया और राणा सांगा का बाल्यकाल बीता।
- कुम्भा के दरबारी विद्वान

मण्डन

वास्तुसार

वास्तुमंडन

राजमंडन

राजवल्लभ- 14 अध्याय

रूपमण्डन- 6 अध्याय

प्रसाद मण्डन- 8 अध्याय

देव मण्डन- 8 अध्याय

वैद्यनाथ मण्डन- चिकित्सा से सम्बन्धित ग्रन्थ

गोविन्द → कलानिधी
उद्धारधोरिणी
ज्ञानदीपिका
सार समुच्चय

कोदण्ड मण्डन धर्नुविद्या से सम्बन्धित

वैद मण्डन् चिकित्सा से सम्बन्धित

मूर्तिकला मंडन - मूर्तिकला से सम्बन्धित

शगुन मण्डन

देव मूर्ति प्रकरण

- मंडन के भाई नाथा ने वास्तुमंजरी ग्रन्थ लिखा।
- मण्डन के पुत्र गोविन्द ने निम्न ग्रन्थ लिखे- कलानिधि - मन्दिरों के शिखर की जानकारी उद्धारधोरिणी - पुन: निर्माण की जानकारी द्वारदीपिका- दरवाजों की जानकारी सार समूच्य- आयुर्वेद की जानकारी

महाराणा कुम्भा के ग्रन्थ

संगीतराज - (5 भाग) सबसे बड़ा ग्रन्थ

संगीत मीमासा

संगीत रत्नाकार

कामराज रतीसार (7 भाग) सूढ़प्रबन्ध

Trick गीत- खाई के पान बनारस वाला

1. गीत कोष
2. पाठ्य कोष
3. नृत्य कोष
4. वाद्य कोष
5. रस कोष

- टीकाऐं- रसीक प्रिय, चण्डीशत्तिका
- कुम्भा के चार नाटक- मेवाड़ी, कन्नड़ भाषा का प्रयोग किया
- महाराणा कुम्भा की पुत्री संगीतशास्त्र की ज्ञाता थी इसलिए उन्हें "वागीश्वरी की उपाधि प्राप्त थी।
- इन्होंने जावर में रमा स्वामी का मन्दिर बनवाया।
- महाराणा कुम्भा के दरबार में वेतन लेकर कार्य करने वाले कवि (वैतनिक कवि) कान्हव्यास थे।
- जिन्होनें "एकलिंग महात्म्य ग्रन्थ की रचना की, जो संस्कृत भाषा में है।

→ पहला भाग → राजवर्णन : → "कुंभा"

- इसी एकलिंग महात्म्य के प्रथम भाग को "राजवर्णन" कहा जाता है, जिसे स्वंय कुम्भा ने लिखा।
- मैहाजी कवि- तिर्थमाला ग्रन्थ लिखा
- सोमदेव को कविराज की उपाधि महाराणा कुम्भा ने दी।
- अन्य दरबारी विद्वान - सोमदेव सुरी, मण्डन, गोविन्द, नाथा
  सोमसुन्दर सुरी कान्ह व्यास, सोमदेव
  तिलक भट्ट

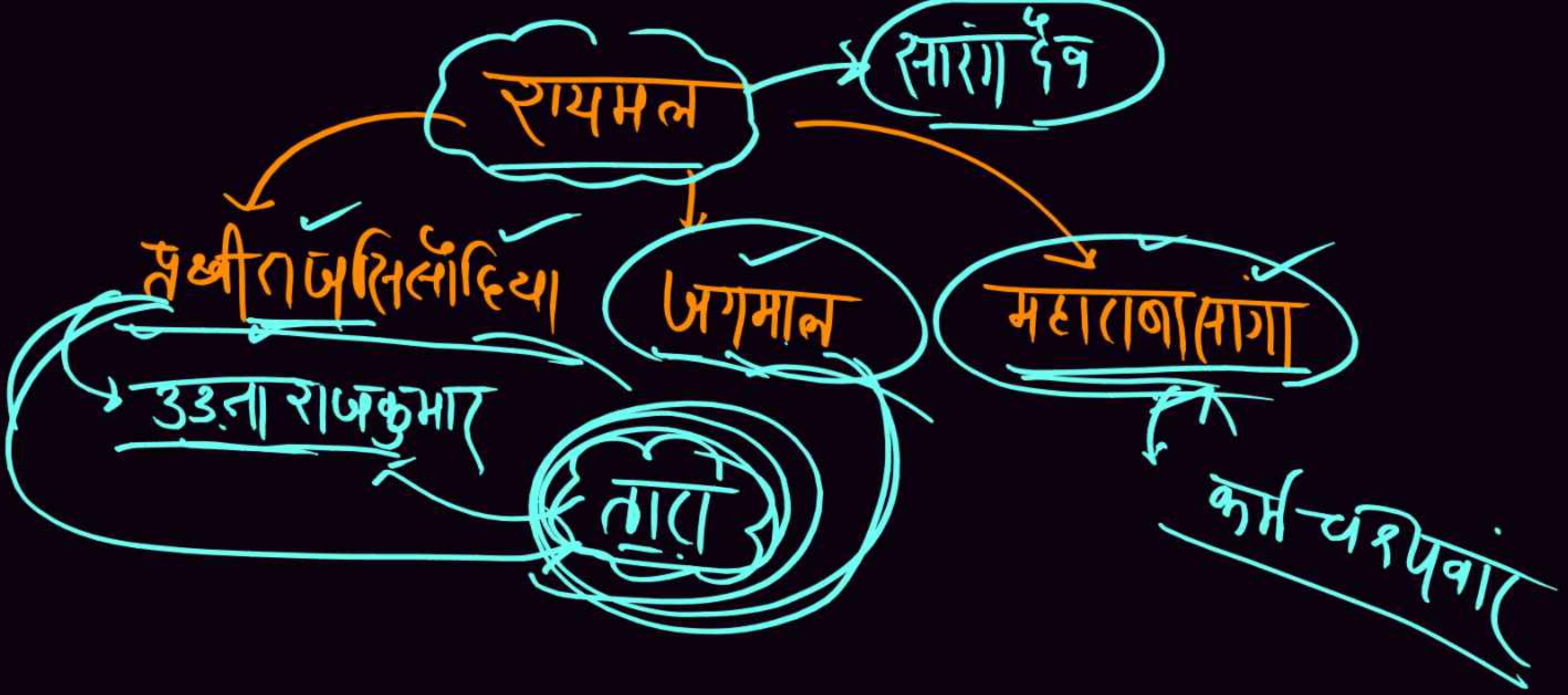
रायमल
सारंग देव
पृथ्वीराज सिसोदिया
जगमाल
महाराणा सांगा
उड़ना राजकुमार
तारा
कर्मचंद पंवार

रायमल

- इन्होंने एकलिंग नाथ मन्दिर का पुनः निर्माण करवाया।
- अदब जी का मन्दिर बनवाया।
- पुत्र- 1. पृथ्वीराज सिसौदिया (उड़नाराज कुमार)

  2. जगमाल

  3. संग्राम सिंह प्रथम (राणा सांगा)
- पृथ्वीराज सिसौदिया ने राव सुल्तान की पुत्री तारा से विवाह किया
- अजयमेय दुर्ग का पुनः निर्माण कर इसका नाम तारागढ़ दुर्ग (अजमेर) रखा।

- पृथ्वीराज सिसोदिया की छतरी- 12 खम्बों की छतरी कुम्भलगढ़ दुर्ग

महाराणा सांगा 1509-1527

- जन्म - 12 अप्रैल 1482 में हुआ (कुम्भलगढ़ दुर्ग) → कटारगढ़ दुर्ग → बादल महल
- पिता- रायमल
- माता - रत्नकुवंरी
- नोट- सिंद्ध गुरु जसनाथ जी का जन्म 1482 में (वि.स. 1539) हुआ

उपाधियाँ

- हिन्दू पात बादशाह
- सैनिकों का भग्नावेश (कर्नल टॉड)
- इन्हें सैनिकों का अंश भी कहा जाता है।

- सांगा के शरीर पर 80 घाव थे
- नोट- 80 खम्भों की छतरी अलवर में है।
- राज्यभिषेक 24 मई 1509 को 27 वर्ष की आयु में हुआ
- राज्यभिषेक के समय समकालीन शासक - युद्ध

मालवा - नासिर शाह महमूद खिलजी द्वितीय

गुजरात - महमूद बेगड़ा मुजफरशाह

दिल्ली- सिकन्दर लोदी इब्राहिम लोदी

- महत्वपूर्ण - सिंकन्दर लोदी ने जसनाथ जी को 500 बीघा भूमि कतरियारसर गांव (बीकानेर) में दान दी।
- नोट- सिकन्दर लोदी ने जाम्भोजी के कहने पर गौ हत्या पर रोक लगाई।
- यमुना नदी पर स्थित तीन बड़े शहर
- Trick - आग दिल में लगी।

आगरा

दिल्ली

मथुरा